शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ.प्रेम भारती रचित कुरुक्षेत्र की राधा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

स्वाति मिश्र (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ.प्रेम भारती ने दायित्वपूर्ण लेखन किया है। कुरुक्षेत्र की राधा में उनका मंतव्य आत्मा की परिधि का निरंतर विस्तार है। यह खंडकाव्य संदेश देता है - कर्म की सार्थकता उसके सेवाधर्मी होने में है और सेवा का स्वरूप कर्म की निरंतरता से ही उभरता है। इस खण्डकाव्य में भारती जी ने राधा के नये स्वरूप को प्रस्तुत किया है। इस रचना में कृष्ण कर्म एवं राधा सेवा का पर्याय है। वर्तमान समय को देखते हुए उन्होंने पौराणिक पात्रों को नया स्वरूप प्रदान किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में राधा एवं कृष्ण के इसी नए स्वरूप को प्रकाषित करने का प्रयास किया गया है। यह हमारी नयी पीढ़ी के लिए किसी प्रेरणा स्रोत से कम नहीं है।

व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ.प्रेम भारती का जन्म मध्यप्रदेश के राजगढ़ ब्यावरा जिले के ग्राम खुजनेर में 14 मार्च 1933 को हुआ। डॉ.भारती ने अनेक शासकीय/अशासकीय पदों पर रहते हुए निरंतर साहित्य सेवा की है। उनकी रचनाएं विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। डॉ. भारती माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कार्य समिति के सदस्य, म.प्र. सर्वशिक्षा अभियान की राज्य स्तरीय कार्यकारिणी के सदस्य, स्वामी प्रवणानंद भारतीय साहित्य न्यास के सदस्य, राज्य शिक्षक-प्रशिक्षक मण्डल के सदस्य, म.प्र. संस्कृति विभाग द्वारा संचालित साहित्य अकादमी की पाठक मंच एवं पुरस्कार समिति सदस्य, म.प्र. शासन ट्रायबल इंस्टीटयूट्स सोसायटी म.प्र. के राज्य स्तरीय संचालक मंडल सदस्य के रूप में आज भी दायित्व निर्वाह कर रहे हैं। गद्य, पद्य, नाटक, उपन्यास, एकांकी, ज्योतिष, पत्रकारिता, योग बाल साहित्य से लेकर अभी तक आपकी चालीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। तुलसी के राम, वीरांगना दुर्गावती, भगवान महावीर इनका गद्य साहित्य है। रामायणी शतक, गीता शतक त्रिवेणी आदि पद्य साहित्य है। काव्य रचनाओं में दमयंती शतक और यशोधरा के आंसू तथा खण्ड काव्यों में साध्वी शबरी, इला, पत्थर के आंसू और कुरुक्षेत्र की राध प्रमुख हैं। इसके अलावा इन्होंने नाटक, कविता संग्रह उपन्यास तथा एकांकी पर भी लेखनी चलाई है। इनकी अनेक रचनाएं स्त्री पात्रों पर आधारित हैं। भारती जी की रचनाएं स्त्रियों की जीवन अवस्था उनके परिश्रम, बलिदान तथा त्याग को प्रस्तुत करने में अधिक है। इन रचनाओं के माध्यम से वे समाज में एक दिशा एक प्रेरणा एक विचार एवं एक संकेत देने में सफल रहे हैं।

कुरुक्षेत्र की राधा

कुरुक्षेत्र की राधा में पांच खण्ड हैं। पहले खण्ड की कथा सूर्य ग्रहण के अवसर पर राधा के कुरुक्षेत्र गमन से प्रारंभ होती है। राधा का यह

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गमन सोद्देश्य एवं प्रतीकात्मक है। दूसरे खण्ड में राधा-माधव मिलन वर्णित है। कृष्ण के मथुरागमन के दीर्घकाल बाद दोनों का यह पुनर्मिलन रोचक एवं अपूर्व है। तीसरा खण्ड गोपियों के उपालम्भ को लेकर है, जिसमें गोपियां उद्धव प्रसंग को नये ढंग से उठाती हैं। चतुर्थ खण्ड में 'स्व, की अपेक्षा 'भव के प्रति कृष्ण का दायित्व बोध प्रमुख है। पंचम खण्ड में कवि अपनी रचना को निष्काम सेवा और कर्म के परस्पर अंतरावलंबन के साथ पूर्ण करता है।

हिन्दी साहित्य में राधा का रूप परिवर्तित होते-होते आधुनिक रूप में वह सेवाभाव का प्रतीत बन गई है।

कुरुक्षेत्र की राधा खण्ड काव्य में भारती जी ने राधा की मनोदशा का वर्णन किया है। हर पल परिवर्तित होते उसके विचार और विरह वेदना में जलना, फिर कृष्ण से कुरुक्षेत्र में भेंट तथा कृष्ण से सेवाभाव का उपदेश पाकर पुनः ब्रज के लिए निकल जाना, इन सब मनोदशाओं का मार्मिक चित्रण श्री भारती ने किया है। हिन्दी साहित्य में आदिकालीन काव्य में जयदेव ने राधा को विशद रूप प्रदान किया है। जयदेव, चंडीदास तथा विद्यापति जैसे कुछ कवियों ने राधा कृष्ण की प्रेम क्रीड़ाओं का मोहक काव्यशैली में वर्णन प्रस्तुत किया है। भक्तिकालीन काव्य में राधा को अष्टछाप के कवियों ने अल्हड़, चंचल, मुग्धा, किशोरी, प्रेम विवश परम सुंदरी, परकीया, स्वकीया, परम वियोगिनी आदि रूपों में वर्णित किया है। रीतिकाल में कवियों का प्रमुख विषय राधा-कृष्ण प्रेम रहा है। श्रीकृष्ण एक नायक के रूप में प्रस्तुत है। यहां राधा-कृष्ण, कृष्ण-गोपी की प्रणयलीला के राधा कृष्ण भक्ति नहीं श्रंगार और प्रेम दोनों के देवता हैं। रीतिबद्ध कवियों ने राधा का नख-षिख वर्णन किया है। आधुनिक काल में राधा को लोक रक्षक स्वरूप में प्रस्तुत किया है। इनमें अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध, एवं डॉ.प्रेम भारती प्रमुख हैं। उपाध्याय जी प्रियप्रवास में राधा को श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्रनेता की विवेकिनी सहचरी के रूप में प्रस्तुत किया है। अंत में कृष्ण द्वारा राधा को लोक सेवा संदेष देते हुए बताया गया है। डॉ.भारती के खण्डकाव्य 'कुरुक्षेत्र की राधा में राधा का लोक रक्षक रूप बताया गया है। इस खण्डकाव्य में कुरुक्षेत्र से लौटते हुए कृष्ण और सूर्यग्रहण के अवसर पर ब्रह्म सरोवर में स्नान के लिए जाते हुए ब्रजवासी, राधा, माता यशोदा, नंदबाबा, गोप, गोपी की भेंट और वार्तालाप दर्शाया गया है।

उधर राधिका बातुलमन में
अंततरंग अलियों के संग।
मन मोहन को ध्यान सिंधु में
लगी पकड़ने लिए उमंग।।
खड़ी देख यों ब्रज-युवतिन में
नील बसन तन गोरी।
क्षण को बनी कृष्ण की मति भी
आज विरह में भोरी।।
फिर राधा माधव भी मिलते
नभ पर छाए बादल
क्षणभर में ही छाई आंधी
कंप उठा भू-मंडल।।1

इस प्रकार राधा और कृष्ण का मिलन होता है। राधा मन ही मन उस सुख को अनुभव कर रही थी जो कुछ देर में उसे मिलने वाला था। कुछ देर बाद राधा-माधव के मिलने से नभ में काले बादल छा गए और आंधी आने से भूमण्डल कांप उठा।

कोमल किसलय तन कांपा था
पाकर प्रेम परिधि विस्तार।
मूर्तिवंत सा बना खड़ा था

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वयं वासना का व्यवहार।।2

कुरुक्षेत्र में राधा और कृष्ण का भाव मिलन कवि ने अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। कृष्ण के विरह में दिन रैन व्याकुल राधा कृष्णमय होकर स्वयं कृष्ण बन गई। ऐसी राधा एवं गोपियों को कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में उपेदश दिया।

राधा को विशेष रूप से संबोधिक करते हुए उन्होंने कहा -

कृष्ण तभी यों सबसे कहते
कैसी प्रिय की माया।
तुमने अपने चिर यौवन को
यू ही व्यर्थ गंवाया।।
नव प्रकाश पा विमल कांति से
अस्तु बनो दुख-मोचन।
अंतर नयन लिए यदि देखो
व्यर्थ बनाए लोचन।।3
मन में लेकर अमर प्रेम तुम
सेवा लक्ष्य बनाओ।
इस विराट की सेवा में ही
जीवन सुमन चढ़ाओ।।
मुझे दिखोगे फिर तुम सुंदर
मत नयना पथराओ।
कुरुक्षेत्र के महामिलन का
यह आदर्श बनाओ।।4

इस उपदेश में श्रीकृष्ण ने राधिका से कहा - तुम अपने जीवन को इस प्रकार नष्ट मत करो। मन में मेरे दर्शन करने पर तुम्हें अपने अभी तक बहाए आंसू व्यर्थ लगेंगे। तुम दूसरों के लिए दुःख मोचन का कार्य करो। सबकी सेवा करके तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी। तुम मुझे ओर भी प्रिय लगने लगोगी।

यौवन ! रस ! तृष्णा ! आकर्षण
बिना सत्य के सूना।
बन जाते भावी संस्कृति हित
दूषित दुखद नमूना।।
यही जागरण गीत तुम्हें मैं
यहां सुनाने आया।
भ्रम के माया जाल तोड़ने
तुम्हें मनाने आया।।
कुरुक्षेत्र की गाथा का यह
युग-संदेश सुनाओ।
सत्य शक्तिमय पंथ दिखाकर
सबको गले लगाओ।।5

श्रीकृष्ण राधा को भौतिक मृगतृष्णाओं से दूर जाने का उपदेश दे रहे हैं। भौतिक भोगवाद व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए अहितकर हैं। अतः माया के बंधन से बाहर निकलकर श्रीकृष्ण राधा को सेवा भाव ग्रहण करने की प्रेरण दे रहे हैं।

सेवा धर्म का मर्म समझाते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं -

सेवा का मधु मर्म समझ लो
ले सद्भाव प्रवणता
कर्मों से संस्कृति पलती है।
और विश्व भी बनता।।
जग विकास की यही प्रणाली
तुम इसको अपनाओ
जीवन के इस सूनेपन में
रस-माधुर्य बहाओ।।6

सेवा भाव धर्म एवं पुण्य का प्रत्यक्ष रूप है। वह लोकहित की आत्मा है। सद्भावपूर्वक सेवाभाव से ही संस्कृतियां निर्मित होती हैं एवं विश्व का विकास होता है। अपने जीवन के सूनेपन को सेवा रूपी रस से सिंचित कर हम अपना जीवन सफल बना सकते हैं। यही संदेश यहां श्रीकृष्ण ने राधा को दिया है।

मौन समर्पित करती उनको
सदर अपना तनम न धन।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जीवन मरण निराशा आशा
हंसना रोना हर पल क्षण।।
रथ पर चढ़ फिर चल देती है
वृंदावन को सबके संग।
ध्यान वृत लेकर पावन
आज मिलन का मधुर प्रसंग।।
भोले माधव समझ न पाए
भोली राधा का वह नेम।
करता है बिछोह में कैसे
टूक हृदय को डर का प्रेम।।7

डॉ.प्रेम भारती ने राधा के हृदय की व्यथा, उसके कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम और एक आज्ञाकारी प्रेमिका का चित्रण किया है। जिसने अपने प्रिय के उपदेशों का पालन किया। कृष्ण के उपदेश सुनकर राधा ने प्रिय की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर उनका आदर किया और रथ पर ब्रज जाने के लिए चढ़ गई।

निष्कर्ष

कवि ने मौलिक सूझ से काव्य की पौराणिक एवं प्रख्यात विषय वस्तु को नया भावबोधं देकर युगानुरूप नयी दृष्टि प्रदान की है। यहां कुरुक्षेत्र का वह प्रसंग लिया गया है। जहां राधा की भेंट श्रीकृष्ण से होती है एवं वे राधा को उपदेश देते हैं। इस खण्डकाव्य में कवि ने कृष्ण द्वारा जो उपदेश दिया है, वह सार्थक सिद्ध होता है। आज के युग में व्याप्त हिंसा, बेईमानी आदि को दूर करने में यह उपदेश अवश्य ही सहायक होगा। इस खण्डकाव्य में श्रीकृष्ण ने राधा को सांसारिक मोहमाया छोड़कर दूसरों की सेवा करने का संदेश दिया है। कृष्ण भक्तों के भगवान हैं और भगवान द्वारा राधा को दिया गया वह उपदेश आज के युग में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उस युग में था। यहां राधा कृष्ण के व्यक्तित्व को पूजने वाली न होकर उनके समष्टिगत रूप की उपासिका बन जाती है। सेवा का रूप धारण कर कर्म कृष्ण में विलीन हो जाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, देववाणी प्रकाशन, इलाहबाद पृष्ठ 27
2 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, पृष्ठ 48
3 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, पृष्ठ 41
4 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, पृष्ठ 43
5 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, पृष्ठ 53
6 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, पृष्ठ 11
7 डॉ.प्रेम भारती, कुरुक्षेत्र की राधा, पृष्ठ 59